राजधानी एक्सप्रेस का मज़ा

Author: Unknown
Hindi Fonts (Translitertaion) By: SINSEX

ज़ूबी और मैं एक मार्कटिंग कंपनी में साथ ही काम करते हैं पर हमारे डिपार्टमेंट अलग–अलग हैं। मैं सेल्स डिपार्टमेंट में काम करता हूँ और ज़ूबी डिसपैच और इनवोयसिंग डिपार्टमेंट में काम करती है। इसलिए हमारा मिलना अक्सर होता रहता है। हमारी काफी गहरी दोस्ती हो गयी थी और हम ऑफिस के बाहर भी मिलने लग गये थे। जब भी हम ऑफिस में मिलते और हमारे आसपास कोई नहीं होता था तो ज़ूबी बड़ी शरारती मुस्कान के साथ मुझे चिढ़ा देती। उसकी वो मुस्कान एक ही झटके में मेरे लंड को खड़ा कर देती। वो अक्सर मेरी पैंट में छुपे मेरे खड़े लंड को देखती और अपनी ज़ुबान बाहर निकाल कर चिढ़ा देती। और कई बार मैं अपनी ज़ुबान अपने मुँह में अंदर बाहर कर उसे चिढ़ा देता जैसे मैं सच में उसकी चूत चाट रहा हूँ। उसका चेहरा शर्म से लाल हो जाता था और बाद में वो मुझे बताती, "राज डार्लिंग जब तुम अपनी ज़ुबान इस तरह हिलाते हो ना तो मेरी चूत गीली हो जाती है।"

एक दिन उसने ऑफिस के इंटरकॉम सिस्टम पर मुझे फोन किया और बताया कि उसका बॉस उसे काम से बाहर भेज रहा है। दिल्ली के एक सपलायर ने एडवाँस ले लिया है और माल सपलायी नहीं किया जिससे ऑर्डर पूरा करने में तकलीफ हो रही है। उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं भी उसके साथ दिल्ली चल सकता हूँ जिससे हम साथ रह सकें। मैंने उसके जाने की और आने की डेट्स पूछी जो उसने मुझे बता दी। मेरे भी दिल्ली में कुछ ग्राहक थे जिनसे मैं कई दिनों से नहीं मिला था। उनके ऑर्डर आते रहते थे पर इतने ज्यादा नहीं आते थे जिस तरह पहले आते थे। मैंने अपने बॉस को सलाह दी कि क्यों ना मैं दिल्ली जाकर उनसे मिल आऊँ और अगर उन्हें कोई शिकायत है तो मैं उन्हें दूर कर दूँगा। मेरी बात मानकर मेरे बॉस ने मुझे जाने की आज्ञा दे दी।

फिर भी हमें प्रोग्राम इस तरह सेट करना था कि किसी को ऑफिस मे पता ना चले। कंपनी के रूल के हिसाब से ज़ूबी सिर्फ़ फर्स्ट क्लास या २–टीयर ए.सी. से ही सफ़र कर सकती थी, जबकी मैं प्लेन से भी सफ़र कर सकता था या राजधानी एक्सप्रेस में फर्स्ट ए.सी से भी। मैंने ज़ूबी को सलाह दी कि वो ऑफिस के ट्रेवल एजेंट से टिकट बुक कराये और अपने बॉस को बता दे कि दिल्ली में वो अपने रिश्तेदार के यहाँ रुकेगी। जब ज़ूबी कि टिकट आ गयी तो उसने वो टिकट मुझे दे दी। मैं तुरंत रेलवे

स्टेशन गया और वो टिकट केंसल करा दी और राजधानी एक्सप्रेस की फर्स्ट क्लास एयरकंडीशंड कूपे (दो सीट वाला) की बुक करा ली। फिर दिल्ली में अपने एजेंट को फोन कर के एक होटल में डबल रूम बुक करा लिया। ट्रेन दोपहर में ४:३० बजे छूटती थी। पूरा हफ़्ता हमारा तैयारी और खुशी में गुज़रा। दोनों जने आने वाले दिनों का मज़ा और सफ़र के सपने देखने लगे। हम दोनों ने तय किया था कि हम अलग-अलग ही रेलवे स्टेशन पहुँचेंगे। मैं रेलवे स्टेशन ठीक ४:१० पर पहुँच गया और अपना कूपा देख कर कूली को अपना सामान सीट के नीचे रखने को कह दिया। फिर दरवाज़े पर खड़ा हो मैं अपनी ज़ूबी की राह देखने लगा। थोड़ी देर में मुझे ज़ूबी अपने कंधे पर एक बैग और हाथ में एक सूटकेस लिए आती दिखायी दी। ज़ूबी ने गुलाबी रंग का सलवार कमीज़ और काले रंग के सैंडल पहने हुए थे और वो बहुत खूबसूरत लग रही थी। मैंने हाथ हिला कर उसे बताया तो जवाब में उसने भी हाथ हिला दिया। मैं उसे लेकर कूपे में आ गय। हम दोनों एक दूसरे को बाँहों में भरकर चूमना चाहते थे पर गालों पर एक हल्की सी चुम्मी ली और सीट पर बैठ गये।

हम टिकट चेक होने का इंतज़ार करने लगे। ज़ूबी मेरी बगल में सीट पर बैठ गयी और कूपे की सुँदरता आश्चर्य भरी नज़रों से देखने लगी। वो पहली बार फर्स्ट ए.सी में सफर कर रही थी। "क्या एक बार ट्रेन चलने के बाद यहाँ पूरा एकाँत होगा, हमें कोई डिस्टर्ब तो नहीं करेगा ना?" उसने पूछा।

मैं अपना हाथ उसकी कामुक टाँगों पर रख के सहलाने लगा, "मेरी जान मेरे साथ जा रही है... इसलिए उसके लिए सबसे बढिया इंतज़ाम होना चाहिए था, और मैं इससे कम का तो सोच ही नहीं सकता था। आखिर मेरी जान ज़ूबी भी तो दुनिया में नम्बर वन है मेरे लिए।" मेरे छूने भर से ही उसके शरीर में सिरहन-सी दौड़ गयी और उसका शरीर काँप उठा, "क्या ठंड लग रही है?" मैंने पूछा।

"नहीं बस आपके छूने भर से ही मुझे कुछ-कुछ होने लगता है" उसने जवाब दिया।

थोड़ी ही देर में कंडक्टर आया और हमारी टिकट चेक की और हमें शुभ यात्रा कह कर चला गया। थोड़ी देर बद ट्रेन चल पड़ी। मैंने कूपे का दरवाज़ा बंद किया और अपनी बाँहें फैला दीं। मेरा इशारा समझ कर ज़ूबी दौड़ कर मेरी बाँहों मे आ गयी। मैं उसे बाँहों में भर कर चूमने लगा, कभी होठों पर, उसके माथे पर, उसके गालों पर,

उसकी गर्दन पर। अब हमारी जीभ एक दूसरे के मुँह में खिलवाड़ कर रही थीं और मेरे हाथ ज़ूबी की पीठ पर रेंग रहे थे। उसके भी हाथ मेरी पीठ को सहला रहे थे और भींच रहे थे। मैंने अपने हाथ उसके चुत्तड़ पर फ़िराये तो चौंक गया। उसने अंदर कोई पैंटी नहीं पहन रखी थी। ज़ूबी मुझसे और सट गयी जिससे उसकी चूत और मेरे लंड की दूरी कम हो गयी थी। मेरा खड़ा लंड पैंट के ऊपर से उसकी चूत पर ठोकर मारने लगा।

"मुझे थोड़ा फ्रेश होना है," ज़ूबी बोली। "मैं अभी आयी" कहकर वो रेलवे द्वारा दिये गये टॉवल को उठा कर बाथरूम की और बढ़ गयी। उसके जाते ही मैंने अपने कपड़े उतारे और एक नाइट सूट पहन लिया।

ज़ूबी करीब १० मिनट बाद आयी, "लो मैं फ्रेश होकर आ गयी हूँ" उसने दरवाज़ा लॉक करते हुए कहा। "क्या पिछले हफ्ते तुम मेरे बारे में सोचते थे?"

"हर वक्त हर पल... आखिर तुम्हें भूलाना इतना आसान तो नहीं है" मैंने जवाब दिया।

"मुझे खुशी हुई ये बात सुनकर," उसने कहा "राज चलो आज हम एक खेल खेलते हैं। खेल का नाम है दिखाओ और बताओ। तुम मुझे बताओ कि तुम क्या देखना चाहते हो और मैं तुम्हें वो दिखा दूँगी। फिर मैं तुम्हें बताऊँगी कि मुझे क्या देखना है और तुम मुझे दिखा देना।"

"और ये खेला कैसे जायेगा?" मैंने पूछा।

"इस खेल के नियम ऐसे हैं। पहला ये कि तुम वो ही चीज़ देखने की माँग कर सकते हो जिससे शरीर का सिर्फ़ एक कपड़ा उतारना पड़े। दूसरा ये कि तुम कपड़े उतारने की माँग नहीं कर सकते," ज़ूबी ने कहा।

"और अगर मैंने ऐसा कुछ देखने की माँग रख दी जिससे दो कपड़े उतारने पड़ें तो...?" मैंने पूछा।

"तो तुम अपना चाँस खो दोगे और मैं कुछ भी नहीं उतारूँगी," उसने जवाब दिया।

"ठीक है... खेल कर देखते हैं, पर ये कैसे पता चलेगा कि कौन जीता?" मैंने पूछा।

"उसकी किसको परवाह है... असली मज़ा तो खेल का है," उसने कहा, "तुम्हें पक्का विश्वास है ना यहाँ कोई नहीं आयेगा?"

"किसी के आने की कोई संभावना नहीं है। मैंने दरवाज़ा अंदर से लॉक कर दिया है," मैंने कहा, "हाँ! हमें सिर्फ़ इतना करना है कि अपनी आवाज़ थोड़ी धीमी रखनी पड़ेगी जिससे किसी को ये ना पता चले कि हम अंदर क्या कर रहे हैं।"

"ठीक है... तो फिर तुम इस खेल की शुरूआत करो," ज़ूबी ने मुझसे कहा।

"ठीक है! मैं तुम्हारा... पेट देखना चाहता हूँ।" मैंने सोचा इसके लिए उसे अपनी कमीज़ उतारनी पड़ेगी। वो खड़ी हो गयी और अपनी कमीज़ को नीचे से पकड़ा और फिर धीरे से ऊपर कर के उतार दिया।

मुझे पता था कि उसका पतला और गोरा बदन काफी दिलचस्प है पर कमीज़ उतारते हुए उसके बदन की गोलाइयाँ गज़ब ही ढा रही थीं। उसके भरे-भरे मम्मे गुलाबी रंग की ब्रा में कैद थे। उसके निप्पल भी तने हुए थे पतली ब्रा से बाहर कि और उठे हुए थे। उसने अपनी कमीज़ समेटी और सीट के कोने पर रख दी।

"अब मेरी बारी... मैं तुम्हारी छाती देखना चाहती हूँ," ज़ूबी ने कहा।

मैं खड़ा हुआ और अपना पूरा समय लेते हुए अपनी शर्ट के बटन खोलने लगा। शर्ट उतार कर मैंने दरवाज़े पर बनी खुंटी पर टाँग दी। मैं वापस सीट पर बैठ गया और बोला, "अब मेरी बारी है... हुम्म्म... मुझे अपनी प्यारी-प्यारी चूचियाँ दिखाओ।"

उसने आगे से खुलने वाली ब्रा पहन रखी थी। ज़ूबी धीरे से मुस्कुराई और अपनी ब्रा का हुक खोल दिया। ब्रा खुल तो गयी पर उसकी आधे से ज्यादा चूंची ब्रा से ही ढकी हुई थी। सिर्फ़ उसकी चूचियों की बीच की दरार ही दिखायी दे रही थी। यहाँ तक कि उसके निप्पल भी ढके हुए थे।

"ठीक है?" उसने पूछा।

"उतनी सफ़ाइ से नहीं दिखायी दे रही जितनी अच्छी तरह से दिखनी चाहिए। तुम्हारी चूचियाँ तो अभी भी ढकी हुई हैं," मैंने कहा।

"हुम्म्म्म... मुझे तो लगता है कि काफी अच्छी तरह से दिखायी दे रही हैं... एक दम खुली तो हैं, या फ़िर मैं समझ नहीं पायी कि तुम कैसे देखना चाहते हो? क्या तुम उतार कर दिखा सकते हो?"

मैं उसकी तरफ़ झुका और उसकी ब्रा के दोनों स्ट्रैप कंधों पर से उतार दिए। ज़ूबी ने अपने हाथ उठाये और स्ट्रैप से बाहर निकाले, जिससे उसकी ब्रा खुल कर गिर पड़ी। उसके निप्पल इतने तीखे थे और तन कर पूरी तरह से खड़े थे।

"मम्म्म... कितनी प्यारी चूचियाँ हैं तुम्हारी," मैंने धीरे से कहा।

"क्या आप इन्हें चूसना चाहते हैं?" उसने अपनी ब्रा को कमीज़ पर फेंकते हुए कह।

"ये भी कोई पूछने की बात है?" मैंने अपना हाथ उसकी बाँयी चूंची की तरफ़ बढ़ाते हुए कहा।

"इतनी जल्दी नहीं..." उसने मेरे माथे पर एक अँगुली रखी और मुझे रोकते हुए कहा, "हमें अभी इस खेल को पूरा करना है... मैं तो बस पूछ रही थी।"

"अरे हाँ, खेल अभी बाकी है..." मुझे एहसास हुआ कि उसे मुझे चिढ़ाने में मज़ा आता है।

"मुझे लगता है कि मैं तुम्हारी टाँगें देखना चाहुँगी" ज़ूबी ने कहा।

मैं खड़ा हुआ और अपने पायजामे का नाड़ा खींच दिया, और धीरे से उसे नीचे कर दिया। मैंने अपनी चप्पल पहन रखी थी। "जानू लगता है कि तुम अपना चाँस खो चुकी हो। पायजामा उतारने के लिए मुझे अपनी चप्पल उतारनी पड़ेगी और तुमने कहा था कि

अगर दो चीज़ें उतारनी पड़ती हैं तो चाँस चला जाता है..." मैंने कहा।

"मैंने सिर्फ़ कपड़ों के बारे में कहा था... चप्पल, सैंडल इत्यादी इसमें नहीं आते... सिर्फ़ कपड़े और वैसे भी मुझे अपनी सलवार उतारने के लिए अपने सैंडल उतारने की जरूरत नहीं है" उसने जल्दी से कहा। लगता था कि वो काफी जल्दी में थी।

मैंने अपना पायजामा उतार दिया, "ठीक है... ये लो मेरी टाँगें देख लो।"

"हाँ... टाँगें..." उसने अपने होठों पर जीभ फ़िराते हुए कहा। मैंने देखा कि उसका ध्यान मेरी टाँगों में कम और मेरी चड्डी से उभरते मेरे खड़े हुए लंड पर ज्यादा था। "...काफी अच्छी हैं," उसने धीरे से कहा।

"अब मेरी बारी है..." मैंने बैठते हुए कहा, "अब मैं तुम्हारी गाँड देखना चाहुँगा।"

"हा! तुम अपना चाँस खो चुके हो। मैं तुम्हें अपनी गाँड नहीं दिखा सकती क्योंकि गाँड दिखाने के लिए मुझे अपनी पैंटी उतारनी होगी... और मैं पैंटी नहीं उतार सकती जब तक तुम ऐसा कुछ देखने को ना माँगो जिससे मुझे सलवार उतारनी पड़े..." उसने हँसते हुए कहा। "अब मैं तुम्हारा सुंदर और खड़ा हुआ लंड देखना चाहुँगी।"

"मुझे नहीं पता था कि तुमने फिर से अपनी पैंटी पहन ली है," मैं खड़े होते हुए नराज़गी भरे स्वर में बोला।

"घर से चलते हुए मैंने उतार दी थी जिससे तुम मेरे बारे में सैक्सी फ़ील करो... पर बाथरूम में जब इस खेल के बारे में सोचा तो फ़िर से पहन ली... मैं तुम्हें थोड़ा चिढ़ाना चाहती थी..." ज़ूबी ने कहा।

मैंने अपनी चड्डी उतार दी जिससे मेरा लंड आज़ाद होते ही अकड़ कर खड़ा हो गया। "ये लो... देख लो..." मैंने ज़ूबी के सामने नंगे खड़े होते हुए कहा। "ज़ूबी मुझे लगता है कि मैं ये खेल हार गया हूँ... अब क्या करना है?"

ज़ूबी ने मेरे लंड को घूरते हुए कहा, "हाँ आप हार गये हो, और हाँ मैं एक नियम

बताना भूल गयी कि हारे हुए व्यक्ति को जीते हुए के कपड़े उतारने पड़ते हैं।"

"मुझे ये नियम बहुत पसंद आया है... अब खड़ी हो जाओ जिससे मैं तुम्हारे कपड़े उतार सकूँ।"

ज़ूबी खड़ी हो गयी और मुझसे सट गयी। मैंने उसे बाँहों में भरा और अपने और नज़दीक कर लिया। जैसे ही उसकी चूचियाँ और खड़े निप्पल मेरी छाती में धंसे, उसने अपना मुँह खोल दिया। मैं अपनी जीभ उसके मुँह में डाल कर घुमाने लगा।

"आपको तो मेरे कपड़े उतारने थे..." वो धीरे से बड़बड़ाती हुई बोली और अपनी बाँहें मेरी गर्दन में डाल दीं। मैंने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया और अपने हाथों को उसकी पीठ पर रेंगाते हुए मैंने आगे से उसकी सलवार पर रख दिया। मैं उसकी सलवार के कमरबंद पर हाथ रख कर सलवार का नाड़ा ढूँढने लगा जो उसने सलवार के अंदर दबा रखा था। ज़ूबी ने मेरी मदद करते हुए अपने नाड़े की डोर बाहर निकाली और मेरे हाथों में पकड़ा दी। मैंने डोर खींच दी जिससे उसकी सलवार ढीली पड़ गयी। मैंने एक हाथ से उसे अपने से और सटाया और अपनी जीभ का खेल उसके मुँह में जारी रखते हुए अपना हाथ उसकी ढीली पड़ी सलवार में डाल दिया। मैं अपना हाथ उसकी पैंटी से ढके चूत्तड़ों पर रख कर सहलाने लगा। ज़ूबी ने अपनी टाँगें चौड़ी कर ली जिससे सलवार खिसक कर नीचे हो गयी। फिर उसने अपनी सलवार अपने सैंडल युक्त पैरों से खींच कर अलग कर ली।

"राज प्लीज़ अपने दाँतों से पकड़ कर मेरी पैंटी उतारो..." ज़ूबी मुझसे गिड़गिड़ाते हुए बोली। "मैंने किताबों में पढ़ा है कि ऐसा करने में बहुत मज़ा आता है।"

"कहने को तो आसान काम लगता है पर बहुत मुश्किल काम है... फिर भी मैं कोशिश करूँगा," कहकर मैं नीचे बैठ गया। नीचे होते हुए मैंने पहले उसकी गर्दन को चूमा, फिर उसकी चूचियों की दरार में अपनी जीभ फिरायी, फिर उसकी चूचियों को चूमा, निप्पल को अपने होठों में ले कर थोड़ा सा काट लिया और फिर उसके पेट को चूमते हुए उसकी नाभी में अपनी जीभ फिरा दी। अब मेरा मुँह उसकी पैंटी के इलास्टिक पर था।

मैंने अपने दोनों हाथ उसके चूत्तड़ों पर रखे और उसे अपने और नज़दीक खींच लिया। उसकी पैंटी सिल्की और सामने से लो-कट थी। ज़ूबी की पैंटी इतनी महीन थी कि उसकी चूत साफ़ दिखायी दे रही थी। दाँतों से पैंटी को उतारना आसान तो नहीं था पर मुश्किल भी नहीं था। मैंने उसके चूत्तड़ों को पकड़ कर उसकी कमर की तरफ़ से उसकी पैंटी के इलास्टिक को अपने दाँतों में दबा कर नीचे कर दिया। फिर उसे दूसरी तरफ घुमा कर कमर के दूसरी तरफ से नीचे कर दिया। पर उसकी पैंटी का इलास्टिक इतना मजबूत था कि अब भी उसकी टाँगों को जकड़ रखा था।

"कितना अच्छा लग रहा है... राज!" ज़ूबी ने मेरे बालों में अँगुली फिराते हुए कहा।

"हाँ! तुम्हारा बदन काफी सुंदर है।"

"शुक्रिया..."

अब मैंने ज़ूबी को घुमा कर उसके कुल्हों पर से पैंटी को दाँतों में पकड़ा और नीचे तक खींचता चला गया। उसके कुल्हे नंगे हो गये थे। मैंने उन्हें चूम लिया और अपनी ज़ुबान फ़िराने लगा।

"ये क्या कर रहे हो? गुदगुदी होती है न..."

फिर मैंने आगे से उसकी पैंटी को खींचते हुए नीचे, उसके सैंडलों तक उतार दिया जहाँ से वो आसानी से अपनी टाँगों से निकाल सकती थी। ज़ूबी ने अपनी टाँगों से पैंटी उतार दी और मैं खड़ा हो गया।

"अब मेरी बारी है," कहकर ज़ूबी घुटनों के बल मेरी टाँगों के बीच बैठ गयी। अपने नाज़ुक हाथों से उसने मेरे लंड को पकड़ लिया और सहलाने लगी।

फिर वो मेरे लंड के सुपाड़े को अपनी जीभ से चुलबुलाने लगी। मेरे लंड को सीधा कर के वो मेरे सुपाड़े को अपनी ज़ुबान से चाटती हुए कभी नीचे की और होती, और कभी ऊपर करते हुए लंड को चाट रही थी। फिर उसने अपना मुँह खोला और लंड को चूसने लगी। साथ ही वो मेरे लंड के पास के बालों में अँगुली घुमा रही थी। एक

अजीब सी सनसनी उठ रही थी मेरे शरीर में।

"जानू! अगर तुम इसी तरह चूसती रही तो मैं अपने आप को नहीं रोक पाऊँगा..." मैंने कहा।

"और मैं चाहती भी नहीं कि तुम रुको..." इतना कह कर वो और जोरों से मेरे लंड को चूसने लगी। मुझे रोकना मुश्किल लग रहा था। मैंने अपने लंड को उसके मुँह में और दबा दिया। वो चूसने के साथ एक हाथ से मेरे लंड को जोरों से रगड़ रही थी और दूसरे हाथ से मेरी दोनों गोलियों को सहला रही थी। मेरी नसों में तनाव बढ़ता जा रहा था। मेरा शरीर मारे उत्तेजना के काँप रहा था। मैंने उसके सिर को पकड़ा और अपने लंड पर दबाते हुए अपने वीर्य की पिचकारी छोड़ने लगा। एक के बाद एक पिचकारी उसके गले तक जा रही थी। वो मेरे लंड को चूसती हुई और हाथों से रगड़ती हुई मेरा पानी निगल रही थी। ज़िंदगी में पहली बार मेरे लंड ने इतना पानी छोड़ा था। जब एक-एक बूँद मेरे लंड से छूट गयी तो ज़ूबी ने मेरे आधे मुर्झाये लंड को अपने मुँह से बाहर निकाल दिया।

"बहुत पानी छोड़ा तुम्हारे लंड ने..." अपने होठों पर जीभ फ़िराते हुए वो खड़ी हो गयी। "बड़ी मुश्किल से निगल पायी मैं"

"इतने समय से तुम मुझे चिढ़ा रही थी, फिर तुम्हारे भरे-भरे मम्मों ने और फिर तुम्हारी लंड चूसने की कला ने मुझे बहुत उत्तेजित कर दिया था... और जब मैं ज्यादा उत्तेजित होता हूँ तो मेरा लंड इसी तरह पानी छोड़ता है," मैंने कहा।

"अपने पानी का स्वाद लेना चाहोगे?" कहकर उसने मेरे होठों पर अपने होंठ रख दिये और अपनी ज़ुबान मेरे मुँह में डाल दी। मेरे वीर्य की महक और स्वाद उसके मुँह में आ रहा था।

"स्वाद अच्छा लगा?" उसने अपनी ज़ुबान मेरे मुँह में घुमाते हुए कहा।

"हाँ आज पहली बार ऐसा किसी ने मेरे साथ किया है... अलग सी उत्तेजना आ जाती है शरीर में..." कहते हुए मैं उसकी चूचियों को मुँह मे लेते हुए उसके निप्पल चूसने

लगा।

"...और ऐसा करने से मेरी चूत और गीली हो जाती है" उसने मेरे सिर को अपनी चूचियों पर दबाते हुए कहा। मैं अपनी जीभ से उसके निप्पल को चुलबुला रहा था। उसके निप्पल एक दम तने हुए थे। उसने और जोरो से अपनी चूंची मेरे मुँह में देते हुए कहा, "राज चूसो इन्हें... जोर-जोर से चूसो.... ओहहहहहहह हाँआँआँआँ.... ऐसे ही।"

मैं उसकी चूचियाँ चूसते हुए अपना हाथ नीचे खिसकाने लगा। उसके पेट और नाभी से होते हुए मेरा हाथ उसकी चूत पर फ़िरने लगा। मैंने महसूस किया कि उसकी चूत पूरी तरह गीली हो चुकी है।

"अब थोड़ा पीछे को लेट जाओ और मुझे अपनी चूत चाटने दो..." मैंने उसे थोड़ा पीछे की और करते हुए कहा।

"मैं तो समझी थी कि आप इसे भूल ही गये हैं..." वो सीट पर बैठ गयी और पीछे की और होते हुए अपनी टाँगें फ़ैला दी। उसकी चूत एक दम गुलाबी और उभरी हुई लग रही थी। मैं उसकी टाँगों के बीच आ गया और दोनों हाथों कि अँगुलियों से उसकी चूत के मुँह को फ़ैला दिया। फिर अपनी जीभ को थोड़ा त्रिकोण बना कर उसकी चूत के अंदर बाहर करने लगा। उसकी चूत से उठती महक और खुशबू मुझे पागल कर रही थी। मैं जोरों से उसकी चूत को चाट रहा था। उसकी चूत को चाटते हुए मैं अपनी ज़ुबान उसकी गाँड के छेद तक ले जाता और फ़िर जोरों से रगड़ते हुए उसकी चूत को चाटता। उसने दोनों हाथों से मेरे सिर को पकड़ कर अपनी चूत पर दबा दिया और सिसक पड़ी, "ओओओओहहहहहह राआआआआज खाआआआआआ जाओओओओओ मेरी चूऊऊऊत को.... हाँआँआँ चूसो... और जोर से ओओओ ओहहहहह आआआआआहहहहह"

मैं जोर से उसकी चूत को चूस रहा था। मैं अपनी ज़ुबान उसकी चूत के अंदरूनी हिस्सों में फ़िरा रहा था। कितनी प्यारी और मुलायम चूत थी उसकी। मेरा लंड तन कर एक दम खड़ा हो गया था। वो मुझे देखती रही और अपना सिर सीट की दीवार से टिका कर चूत चूसायी का मज़ा ले रही थी। उसका एक हाथ मेरे सिर पर बालों को

सहला रहा था और वो अपने दूसरे हाथ से अपने निप्पल को भींच रही थी।

"हे भगवान! कितना अच्छा लग रहा है, और करो, मुझे इसकी जरूरत है... मैं कितने दिनों से इसका इंतज़ार कर रही हूँ।"

मुझे लगा जैसे उसे और भी किसी की जरूरत है चूत में। मैंने अपनी एक अँगुली और फिर दूसरी अँगुली उसकी चूत में डाल दी। अब मैं अपनी जीभ के साथ अपनी अँगुलियाँ भी उसकी चूत के अंदर बाहर कर रहा था। उत्तेजना में वो अपना सिर इधर उधर पटक रही थी और साथ ही अपनी कमर थोड़ा उचका देती, जिससे मेरी जीभ अंदर तक उसकी चूत में घुस जती। मैं तेजी से उसे जीभ और अँगुली से चोद रहा था। ज़ूबी से भी अब सहन नहीं हो रहा था। मैं और जोर से उसे चाट रहा था।

जैसे ही उसकी चूत ने पानी छोड़ा, वो चिल्ला पड़ी, "ओहह... हाँआँ... ओहहहह माँ... मेरा निकल रहा है... मेरी जान गयी... कितना अच्छा लग रहा है... राज... खा जाओ मेरी चूत को!" उसका शरीर ढीला पड़ गया था। मैं जोर से उसे चूस रहा था और उसका शरीर काँपते हुए पानी छोड़ रहा था। थोड़ी देर में वो शाँत पड़ गयी और उठ कर बैठ गयी। मैंने भी अपनी अँगुलियाँ उसकी चूत मे से निकाल लीं।

"डार्लिंग आज तो तुम बहुत ही उत्तेजित हो गयी हो... तुम्हारी चूत ने भी काफी पानी छोड़ा है... देखो मेरा लंड भी तन कर खड़ा हो गया है..." मैंने उसकी चूत को सहलाते हुए कहा।

"मैं तो आपके छूने भर से ही उत्तेजित और गीली हो जाती हूँ..." उसने कहा, "और आज तो मैं पहले ही से उत्तेजित और गीली थी... फिर आपने मेरी चूत कि चूसायी भी इतनी मजेदार तरीके से की, कि जब मेरा पानी निकला तो मैं जैसे स्वर्ग में पहुँच गयी थी।" ज़ूबी झुकी और मेरे चेहरे को अपने करीब खींचते हुए मेरे होठों पर अपने होंठ रख दिए।

"तुम्हारी खुशबू और होठों का स्वाद तो एकदम चूत जैसा लग रहा है..."

"क्या तुम्हें अपनी चूत की महक और स्वाद अच्छा लग रहा है?" मैंने उसके होठों को

चूसते हुए पूछा।

"हाँ अगर वो आपके मुँह से आ रहा हो तो..." ज़ूबी ने मेरे मुँह में अपनी जीभ डालते हुए कहा।

फिर ज़ूबी खड़ी हो गयी और घूम कर खिड़की के हथे को पकड़ कर झुक गयी। हाई हील की सैंडल पहने होने की वजह से उसके नंगे चूत्तड़ कुछ उठ गये थे। उसने अपनी टाँगें फैला दीं जिससे उसकी चूत का मुँह साफ़ दिखायी दे रहा था। "अच्छा अब ज्यादा बातें मत करो और मुझे चोदो... और बहुत कस के चोदो... अपने लंबे और मोटे लंड से मेरी चूत की जम कर धुनाई कर दो... अब रहा नहीं जा रहा है।"

मैं उठ कर उसके पीछे आ गया और उसके दोनों चूत्तड़ों को थोड़ा फैला कर अपना लंड कुछ देर तक उसकी चूत के छेद पर रगड़ता रहा। फिर एक जोर का धक्का मार कर मैंने अपना पूरा लंड उसकी चूत में घुसा दिया। उसकी चूत गीली ही नहीं थी बल्कि रस से भरी पड़ी थी। मैं अपने हाथों से उसके चूत्तड़ पकड़ कर धीरे धीरे धक्के लगाने लगा। थोड़ी देर बाद मैं जोर से धक्के मार रहा था और वो भी अपने चूत्तड़ पीछे धकेल कर मेरे धक्कों का साथ दे रही थी।

"क्या तुम्हें इस तरह चुदवाना अच्छा लगता है?"

"ओहह माँ... बहुत अच्छा लग रहा है... कितना अच्छा है... तुम्हारे लंड ने मेरी चूत को पूरा भर दिया है जानू... ओहहहहह हाँ.... और जोर से चोदो" वो सिसक रही थी। उसकी कामुक सिसकियाँ सुनकर मैं भी जोश में आ गया। उसके चूत्तड़ों पर थप्पड़ जमाते हुए कस कर चोदने लगा।

"ओहहहहहह हाँआँआँ.... मेरे चुत्तड़ों को ऐसे ही मारो...आहिस्ता-आहिस्ता... ज्यादा जोरों से नहीं...." वो भी चुदाई का मज़ा ले रही थी। मैं जोर से उसे चोद रहा था और वो भी कुल्हे पीछे धकेल कर पूरा साथ दे रही थी। मैं जानता था कि वो जल्द ही दूसरी बार झड़ने वाली है। मैं भी उसके पीछे-पीछे ही था। ज़ूबी ने अपना एक हाथ अपनी टाँगों के बिच में से लेते हुए मेरे दोनों अंडे पकड़ लिए और सहलाने लगी।

मैं जोर के धक्के मार रहा था कि वो सिसकी, "मम्म्म.... ओहहह माँ.... छूट रहा है मेरा... हे भगवान.... मेरा निकल रहा है।" ज़ूबी का शरीर हल्के से काँपा और उसकी चूत ने पानी छोड़ दिया। मैं भी अपने आपको ज्यादा देर तक नहीं रोक पाया और मेरे लंड ने उसकी चूत में वीर्य की धारा छोड़ दी। मैं और जोर से धक्के मार कर अपना लंड उसकी चूत के अंदर तक घुसा देता और हर धक्के से एक पिचकारी मेरे लंड से छूट जाती। जब मेरे लंड की एक-एक बूँद उसकी चूत में गिर गयी तो मैंने अपने लंड को उसकी चूत के बाहर निकाल लिया।

"राज कितना अच्छा था..." उसने मुझे चूमते हुए कहा। हम दोनों एक दूसरे को बाँहों में लिए लेटे हुए थे।

तभी केबिन के दरवाज़े पर एक वेटर ने दस्तक दी और कहा कि वो खाना देना चाहता है, हमें वेजिटेरियन चाहिए या नॉन वेजिटेरियन। हमने नॉन वेजिटेरियन का ऑर्डर दिया और अपन-अपने कपड़े पहनने लगे। थोड़ी देर बाद वेटर ने खाना लगा दिया और हम खाने लगे। खाना खाने के बाद मैं नीचे वाली सीट पर लेट गया और ज़ूबी भी मेरी बगल में, अपना सिर मेरी छाटी पर रख कर लेट गयी। उसने अपनी दो अँगुलियाँ मेरी थोडी पर रखी हुई थीं और प्यार भरी नज़रों से मेरी आँखों में घूर रही थी। "राज मैं तुमसे प्यार करती हूँ।"

"मैं भी तुमसे बहुत प्यार करता हूँ... ज़ूबी!" कहकर मैंने उसे अपनी बाँहों में भर लिया।

।।।।।।। समाप्त ।।।।।।